नव भारत, भोपाल 14 JAN 2011

शिवराज का नया वर्ष

रियासत की सियासत को छोड़कर सारे सूबे में अपनी समझदारी का डंका बजाने वाले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के परस आलोचक भी इस बात से सहमत हैं कि उनमें कर्म और भाग्य का अद्‌भुत समन्वय है. वे जनता के दुख को पढ़ना और उसका समाधान खोजना जानते हैं. मुख्यमंत्री के रूप में समस्याओं से निपटने का उनका तरीका विवेक, औचित्य की कसौटी पर इतना खरा रह आया कि विरोधी भी अपनी मुखलिफ मुहिम में दम नहीं भर सके. बतौर मुख्यमंत्री शिवराज ने पांच साल पूरे कर लिये हैं. अपने कार्यकाल में उन्होंने समाज के सभी वर्गों के संरक्षण और विकास पर जोर दिया है.

यह वर्ष प्रदेश में समृद्धि एवं विकास लेकर आयेगा ऐसा सबको विश्वास है. यह संभव भी होगा क्योंकि प्रदेश की बागडोर जन हितैषी एवं दूसरों के दुख-दर्द को समझने वाले जमीन से जुड़े नेता के हाथों में है. बात युवाओं को रोजगार देने की हो अथवा महिलाओं के स्वावलंबन की, हर तरफ युद्ध स्तर पर प्रयास जारी हैं. सड़क सुधार एवं अन्य सुविधाओं के विस्तार के लिये आवश्यक धन जुटाया जा रहा है. वादे दूसरे भी पूरे हो रहे हैं, लेकिन उनके सुखद नतीजों के लिये हमें सरकार को कुछ समय और देना चाहिये. प्रदेश के विकास की गाड़ी यदि पटरी पर आ गयी है तो वह नित नयी मंजिलें भी तय करेगी. इसमें अब तनिक शंका की गुंजाइश नहीं है.

मध्य प्रदेश एक ऐसा विशाल राज्य है जिसके पास युवा शक्ति का अपार भंडार है. उल्लेखनीय है कि युवाओं की ऊर्जा रोजगार की तलाश में क्षय हो जाती है. सरकार की नयी उद्योग नीति की सोच रोजगार के पीछे भागने वाले युवा वर्ग को उद्योगों से जोड़ने की है. इस नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बड़े उद्योग, उनके सहायक उद्योग और लघु उद्योगों की स्थापना को समान महत्व दिया गया है. इतना ही नहीं नयी उद्योग नीति में किस तरह के उद्योगों के लिये किस तरह सर्वोत्तम संभावनाएं हैं, इनका विशेष ध्यान रखा गया है. मध्य प्रदेश में गौवंश के वध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्णय, असहाय अनुत्पाद एवं विकलांग गौवंशीय पशुओं को रखने की व्यवस्था के लिये गौशालाओं को सुदृढ़ करने का प्रयास भी जारी रखना चाहिये.

निलय श्रीवास्तव